Vol 3 Issue 1 Oct 2013

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 1, Oct. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

आचारसंहिता के प्रश्न एवं पत्रकारों की जागरूकता का अध्ययन

साकेत रमण

सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विवि, इंदौर

सारांश :

यह सच है कि पत्रकारो में आचारसंहिता के प्रति जानकारी का आभाव है परंतु यह भी उतना ही सच है कि यह दुहाई वे लोग देते है, जो स्वयं ही नैतिकता के सबसे बड़े दुश्मन है। फिर भी इस आधार पर किसी पत्रकार को अनैतिक होने के लिए कहा भी नहीं जा सकता। अमेरिका में प्यू रिसर्च सेंटर द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह उजागर होता है कि हाल के दिनो में वैश्विक स्तर पर मीडिया की विश्वसनीयता में गिरावट दर्ज की गई है। इसके पीछे कही न कही मीडिया से जुड़े लोगों का नैतिक तौर पर कमजोर होना भी है। इस अध्ययन के अंतर्गत आचार संहिता के एक पहलु को ही फोकस किया गया है और यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि कार्यरत पत्रकारों एवं नव–प्रशिक्षुओं में आचार संहिता को लेकर कितनी जागरूकता है। अध्ययन के सैंपल सर्वे प्रविधि का चयन किया गया है जिसके माध्यम से आचार संहिता को लेकर पत्रकारों की जागरूकता का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :

आचार संहिता का पालन एक पत्रकार के लिए क्यों और कितना जरूरी है, आज यह मुद्दा एक सर्वकालिक बहस का रूप लेता जा रहा है। जैसे ही चुनाव आते है तो पेड न्यूज का जिन्न निकलने लगता है जबकि प्रत्येक अखबार नो पेड न्यूज की घोशणा भी करता है। उसी प्रकार जब आचारसंहिता उल्लंघन का कोई बड़ा मामला बनता है तो पत्रकारो को आचारसंहिता की दुहाई दी जाती है। हालांकि यह सच है कि पत्रकारो में आचारसंहिता के प्रति जानकारी का आभाव है परंतु यह भी उतना ही सच है कि यह दुहाई वे लोग देते है, जो स्वयं ही नैतिकता के सबसे बड़े दुश्मन है। फिर भी इस आधार पर किसी पत्रकार को अनैतिक होने के लिए कहा भी नहीं जा सकता। एक दौर था जब पत्रकारिता हमारे लिए एक मिशन की तरह थी जहां हमारा लक्ष्य था भारत को आजाद कराना। परंतु आजादी के बाद यह एक व्यवसाय के रूप में उभरी। किसी भी व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसके क्रियान्वयन का एक सर्वमान्य और सामान्य सिद्धांत होता है और ऐसे में पत्रकारिता के लिए भी आचार संहिता जरूरी है। आचार संहिता से किसी पत्रकार को उसकी सीमाओं का ज्ञान होता है और एक निश्चित नियम के तहत कार्य करने को वह बाध्य होता है। इससे पत्रकारों में एक दायित्व बोध की भावना आती है।

अमेरिका में प्यू रिसर्च सेंटर द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह उजागर होता है कि हाल के दिनो में वैश्विक स्तर पर मीडिया की विश्वसनीयता में गिरावट दर्ज की गई है। इसके पीछे कही न कही मीडिया से जुड़े लोगों का नैतिक तौर पर कमजोर होना भी है। आचारसंहिता के पालन से पत्रकारों की स्वयं की विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होती है। चूंकि पत्रकार एक तरह से माध्यम के रूप में कार्य करता हैं। आचार संहिता रहित पत्रकारिता से पत्रकार स्वच्छंद होंगे। उनमें उत्तरदायित्व की भावना नहीं आएगी। वे गलत तरीके से खबरों की रिर्पोटिंग, लेखन और उसका संपादन करेंगे। इससे लोगों को सही सूचना नहीं मिलेगी। समाज में गलत सूचनाएं फैलेगी जिसका परिणाम हमेशा बुरा होगा। पत्रकारों द्वारा आचार संहिता के पालन से पत्रकारिता के व्यावसायिक मूल्यों की रक्षा होती है और उसे अक्षुण्ण रखने में सहायता मिलती है।

राजनीतिक विचारक जेएस मिल ने भी कहा था कि पूर्ण स्वतंत्रता किसी को भी भ्रष्ट बनाती है। इसलिए कोई व्यक्ति हो या संस्था हो उसपर नियंत्रण जरूरी है। एक नियंत्रण कानून का और दूसरा नियंत्रण खुद का, अपनी अंतरात्मा का। किसी व्यापार या व्यवसाय में यह नियंत्रण और भी महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि उस व्यवसाय की गरिमा और साख हमेशा बनी रहे और उसे सामाजिक मान्यता मिलती रहे।

इस मसले पर सीएनएन के वरिष्ठ पत्रकार पीटर अर्नेस्ट का कहना है कि ज्यादातर देशों में समाचार–पत्र, टेलीविजन और मैगजीन बड़े पाठक समूह के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा अर्जित करने में लगे है। यह लोगों को ज्यादा से ज्यादा अपराध समाचारों की खुराक, सेलेब्रिटी गॉसिप और सॉफ्ट फीचर पेश करने में लगे हुए है, जबकि गंभीर विषयों को छोड़ दे रहे है। क्योंकि समाचार प्रबंधको को लगता है कि गंभीर विषय पाठकों का ध्यान अपनी ओर नहीं खींच सकेंगे।

मीडिया आचार संहिताओं का उल्लंघन करके जिस तरह के कंटेंट आज श्रोता/पाठक और दर्शकों को परोसे जा रहे हैं इसके लिए अंततः पत्रकारों को ही जिम्मेदार ठहराया जा रहा हैं। आचार संहिताओं के उल्लंघन के मामले में मीडिया संस्थानों का दबाव किस हद तक काम करता है और व्यक्तिगत रूप से पत्रकार इसके लिए कितने जिम्मेदार हैं इस तथ्य का खुलासा एक व्यवस्थित अध्ययन से ही किया जा सकता है। यहां सबसे महत्वपूर्ण यह है कि जिन आचारसंहिताओं की आज बात हो रही है उनके बारे में पत्रकार कितना जानते है। अगर जानते है तो कौन–कौन से पहलु के बारे में जानते है। या फिर उनमें जागरूकता का आभाव है तो क्या संबंधित संस्थान, इस प्रकार की जागरूकता के प्रसार के लिए कोई कार्य कर रहे है। हालांकि इस अध्ययन के अंतर्गत आचार संहिता के एक पहलु को ही फोकस किया गया है और यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि कार्यरत पत्रकारों एवं नव–प्रशिक्षुओं में आचार संहिता को लेकर कितनी जागरूकता है।

Title: *आचारसंहिता के प्रश्न एवं पत्रकारों की जागरूकता का अध्ययन*
Source: Review of Research [2249-894X] *साकेत रमण* **yr:2013 vol:3 iss:1**

अध्ययन के उद्देश्य :
समाचार–पत्रों में कार्यरत पत्रकारों में आचार संहिता की समझ का अध्ययन करना।
समाचार–पत्रों में कार्यरत पत्रकारों में आचार संहिता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन प्रविधि
सैंपल सर्वे :

सामाजिक विज्ञान या मीडिया शोध कार्यविधि आमतौर से शोध कार्यों में सर्वे विधियों पर निर्भर होती है। इसमें एक बड़ी आबादी से काफी मात्रा में सूचना प्राप्त करने का फायदा होता है। क्योंकि संपूर्ण समग्र की प्रतिनिधिक इकाई को इस प्रकार के अध्ययन में शामिल किया जाता है। इसे व्यक्तिगत और सामाजिक तथ्य, धारणाएं और रूझान प्राप्त करने के लिहाज से अनुकूल बनाया जा सकता है। इसका उपयोग लक्षित आबादी के प्रतिनिधिक सैंपल से डाटा संकलन के लिए किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में सैंपल सर्वे प्रविधि के माध्यम से पत्रकारों में आचार संहिता के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जाएगा।

सैंपल चयन एवं उपकरण

शोध के लिए नोएडा एवं दिल्ली के विभिन्न प्रिंट मीडिया संस्थानों में कार्य करने वाले पत्रकारों को सैंपल के रूप में लिया गया है। अमर उजाला, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, पंजाब केसरी, राष्ट्रीय सहारा जैसे हिन्दी समाचार पत्रों के अलावा चार स्थानीय स्तर के समाचार पत्रों के पत्रकारों को भी अध्ययन में शामिल किया गया है। सैंपल में शामिल उत्तरदाताओं में लगभग आधे रिर्पोटर हैं और आधे सब–एडीटर के रूप में कार्य करते हैं। सैंपल का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया। कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन करने के बाद प्रश्नावली विधि के माध्यम से उनसे तथ्य एकत्र किए गए है। प्रश्नावली मिश्रित प्रकार की थी जिसमें कुछ बंद प्रश्न और कुछ खुले प्रश्न पूछे गए हैं। शोध की प्रकृति विशिष्ट थी। अतः समय एवं उपलब्धता के आधार पर निदर्शन की इस प्रविधि का चयन करना प्रासंगिक एवं उपयोगी था।

तथ्यों की विवेचना

सैंपल सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पत्रकारिता के क्षेत्र में औपचारिक शिक्षा ग्रहण किया है, जबकि 20 प्रतिशत लोगों ने इस क्षेत्र में आने के पहले पत्रकारिता में किसी तरह की औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की है।

हाँ	नहीं
80%	20%

औपचारिक शिक्षा लेने वाले पत्रकारों में 40 फीसदी उत्तरदाताओं ने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा ग्रहण की है, वहीं 60 फीसदी लोग डिप्लोमा या सर्टिफिकेट प्राप्त किए हुए है।

स्नातकोत्तर	डिप्लोमा या सर्टिफिकेट
40%	60%

उत्तरदाताओं से आचार संहिता के प्रति जानकारी के बारे में पूछा गया तो इसके उत्तर में 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था कि उन्हें आचार संहिता की थोड़ी बहुत जानकारी है। 20 फीसदी लोगों को आचार संहिता के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है। वहीं 20 फीसदी लोग आचार संहिता के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं।

पूर्ण जानकारी	आंशिक जानकारी	कोई जानकारी नहीं
20%	60%	20%

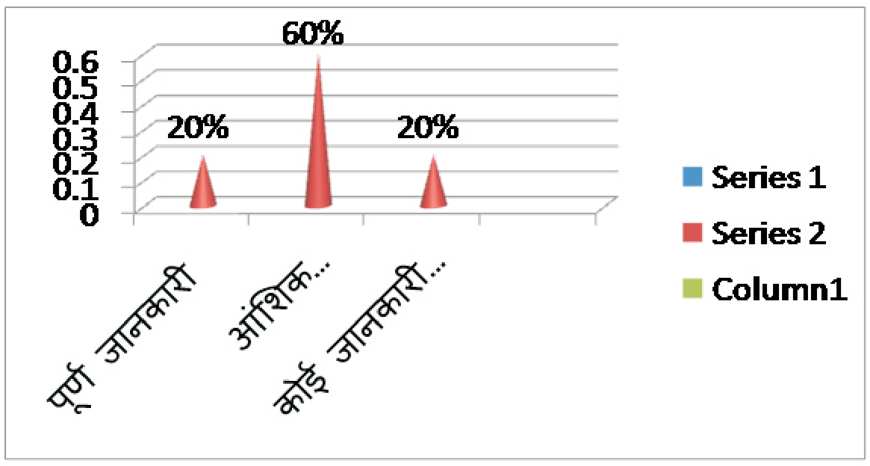

जब पत्रकारों से यह जानने का प्रयास किया गया कि समाचार लेखन, संपादन और रिपोर्टिंग के दौरान वे आचार संहिता का कितना पालन करते हैं तो इस प्रश्न के जवाब में 30 फीसदी लोगों ने कहा कि वे हमेशा आचार संहिता का पालन करते हैं, जबकि 55 फीसदी ने बताया कि उन्हें कार्य के दौरान काम के दबाव में आचार संहिता के बारे में याद ही नहीं रहता है। जबकि 15 फीसदी उत्तरदाता कभी –कभी आचार संहिता का पालन करते हैं।

हमेशा करते हैं	काम के दवाब के कारण याद नहीं रहता	कभी–कभी करते हैं
30%	55%	15%

अध्ययन की प्रश्नावली में कुछ प्रश्न ऐसे भी थे जो खुले प्रकार के थे और जिनके माध्यम से उत्तरदाताओं की सोच के स्तर, उनमें जागरूकता के स्तर का पता चलता है। आचार संहिता उल्लंघन के सर्वाधिक गंभीर मामलों के विषय में अधिकतर उत्तरदाताओं का जवाब पेड न्यूज की समस्या की तरफ केन्द्रित था। पेड न्यूज को पत्रकारों ने आचार संहिता उल्लंघन का एक गंभीर मुद्दा बताया है। खबरों में अपने विचार डालना। या फिर किसी मामले में न्यायालय का फैसला आने के पहले उसपर अपनी तरफ से फैसला देना, अदालती कार्यों में हस्तक्षेप और न्यायालय पर किसी प्रकार की टिप्पणी को भी उत्तरदाताओं ने गंभीर मामला बताया है।

पत्रकारों का यह मानना था कि मीडिया को मीडिया ट्रायल बंद कर देना चाहिए। देश की आंतरिक व बाहय सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय मामलों से जुड़े मुद्दे पर गोपनीय रिपोर्टों को प्रकाशित करने को पत्रकारों ने आचार संहिता उल्लंघन के गंभीर मामलों में से एक बताया है। महिला, नाबालिग बच्चों के मामले और व्यक्तिगत निजता के मसले को भी संवेदनशील मुद्दा बताते हुए इन विषयों पर आए दिन होने वाली आचार संहिता के उल्लंघन के मामले को एक गंभीर समस्या के रूप में पत्रकार देख रहे हैं। इसके अलावा मीडिया समूहों का किसी खास राजनीतिक दल की ओर झुकाव और कॉरपोरेट घरानों से बढ़ती नजदीकियां और खबरों व संपादकीय लेखों द्वारा उनका अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करने की नीति को पत्रकारों ने मीडिया आचार संहिता का गंभीर उल्लंघन माना है।

आचार संहिताओं में वर्णित नियमों की जानकारी के प्रश्न पर पत्रकारिता में औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अधिकतर पत्रकारों को बुनियादी नियमों की जानकारी थी। उन्हें औसतन आठ से 10 नियमों का ध्यान था जिसे वे दिन–प्रति–दिन के कार्यों के दौरान याद भी रखते हैं। जबकि पत्रकारिता में अप्रशिक्षित लोगों को अपेक्षाकृत कम नियमों की जानकारी थी। उन्हें सामान्यतः चार से छः नियमों की जानकारी थी।

कुछ ऐसे भी उत्तरदाता थे जिनमें आचार संहिता के सिर्फ दो से चार नियमों की जानकारी पाई गई जबकि कुछ ऐसे भी पत्रकार थे जिनमें आचार संहिता को लेकर ज्ञान शून्यता की स्थिति पाई गई। वे आचार संहिता शब्द से तो परिचित अवश्य हैं लेकिन ये होता क्या है और इसका प्रयोग उन्हें अपनी रिर्पोटिंग, लेखन और संपादन में कब और कैसे करना है उन्हें इस बात की कोई जनकारी नहीं है।
आचार संहिता के कुछ वैसे नियम जो सर्वाधिक पत्रकारों को याद थे वह अपने कम के अनुसार इस प्रकार है।

1.बलात्कार पीड़ित महिला का वास्तविक नाम नहीं लिखना।
2.न्यायालय की अवमानना और उसपर किसी प्रकार का आक्षेप नहीं लगाना।
3.अश्लीलता को बढ़ावा नहीं देना।
4.धार्मिक भावना को ठेस नहीं पहुंचाना।
5.सरकार के गोपनीय रिपोर्ट को प्रकाशित नहीं करना।
6.देश की एकता अखण्डता और संप्रभुता का ख्याल करना।
7.अपराध का महिमामंडन और उद्दीपन करने से बचना।
8.व्यक्तिगत मानहानी और संसदीय विशेषधिकारों का ध्यान रखना।
9.पक्षपात रहित और तथ्यों पर आधारित खबर लिखना।

अध्ययन के निष्कर्ष :

सैंपल सर्वे में प्रश्नावली विधि के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह आसानी से कहा जा सकता है कि वर्तमान भारतीय मीडिया के सामने आचार संहिता के प्रश्न एक गौण प्रश्न है। जिन पर चर्चा करना अपना समय व्यर्थ गंवाना है। क्योंकि भारत की सबसे बड़ी

समस्या यह है कि आजादी के 65 सालो बाद भी हमारी पत्रकारिता बिरादरी किसी एक आचार संहिता को लेकर सहमत नहीं है। ऐसा लगता है कि यह अराजकता वाली व्यवस्था है जहां कि प्रत्येक संस्थान अपनी–अपनी डफली और अपना–अपना राग अलाप रहा है। दूसरी ओर हमारी सबसे बड़ी समस्या अप्रशिक्षित पत्रकारों की बड़ी फौज है तो दूसरी ओर रोज ब रोज गली–मुहल्ले से निकलने वाले अखबार। क्योंकि आज का पूरा भारतीय मीडिया तंत्र बाजारवाद की ताकत से संचालित हो रहा है जो कम पैसे में खबर लिखने वालो और गढ़ने वालों की तलाश में है। उसके लिए न तो कोई नैतिकता को मापक है और न ही पाठकों द्वारा बहिष्कार का भय। अध्ययन ने पत्रकारों की जागरूकता एवं मीडिया व्यवस्था की कई खामियों को उजागर किया है। कुछ प्रमुख बिन्दु है–:

अध्ययन के बाद यह आसानी से कहा जा सकता है कि ज्यादातर वैसे पत्रकारों एवं नव–प्रशिक्षुओं में आचार संहिता के प्रति जागरूकता का आभाव है, जो बगैर पत्रकारिता के किसी औपचारिक प्रशिक्षण या कोर्स को किए कार्य कर रहे है। दूसरे कई ऐसे भी पत्रकार है जिन्हें औपचारिक प्रशिक्षण के बाद भी आचार संहिता का ज्ञान नहीं है। जो दो तथ्यों को प्रमाणित करता है– प्रथम तो हमारे देश में किसी एकरूप या सर्वमान्य आचार संहिता का नहीं होना। और दूसरे पत्रकारिता प्रशिक्षण संस्थानों के पाठयक्रम एवं शिक्षकों में गुणवत्ता का आभाव।

मीडिया संस्थानों में खबरों को लेकर आपा–धापी एवं सबसे तेज और आगे बढ़ने की होड़ के कारण भी कई बार आचार संहिता के लिए सोचने का समय पत्रकारों को नहीं मिलता। क्योकि ज्यादातर उत्तरदाताओं का मानना है कि काम के दबाव के कारण भी कई बार भूलवश वे आचार संहिता का उल्लंघन कर जाते है।

सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु जो पत्रकारों ने उठाएं है वह है कि मीडिया में कारपोरेट लॉबी का बढ़ता प्रभाव एवं खबर बेचने की संस्कृति का बढ़ता चलन भी आचार संहिता जैसे अनुपयोगी धारणाओं के प्रति पत्रकारों मे एक अविश्वास पैदा किया है। वही कुछ का मानना है कि कमजोर नियामक संस्थानों के कारण एवं राजनीतिक दबाव में भी यो बातें अब अप्रासंगिक हो चुकी है।

ज्यादातर पत्रकारों ने मीडिया ट्रायल और पेड न्यूज सिन्ड्रोम को आचार संहिता उल्लंघन का एक गंभीर मुद्दा बताया है। इसके कारण के रूप में मीडिया समूहों का किसी खास राजनीतिक दल की ओर झुकाव और कॉरपोरेट घरानों से बढ़ती नजदीकियो को उन्होंने माना।

संदर्भ ग्रंथ :

मेहता, आलोक, पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
श्रीधर, विजयदत्त, खबरपालिका की अचार संहिता, माधवराव सप्रे समृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल 2006।
चतुर्वेदी, जगदीश्वर, जनमाध्यम और मास–कल्चर, सारांश प्रकाशन प्रा. लि.,नई दिल्ली 1996।
अग्रवाल, मधु, भारतीय विज्ञापन में नैतिकता, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1995।

वेबसाइट :

http://scholarcommons.usf.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=3346&context=etd&sei-redir=1&referer=http%3A%2F%2Fwww.google.co.in
http://www.cybercollege.com/tvnews.htm
http://www.poynter.org/latest-news/mediawire/185390/study-newspapers-had-steep-drop-in-credibility-in-last-decade/
http://com.miami.edu/car/miamibeach1.htm
www.exchange4media.com
www.thehoot.org

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net